इकाई 19 स्वतंत्रता

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य
19.1 परिचय
19.2 स्वतंत्रता का अर्थ
19.3 स्वतंत्रता संबंधी जेएस मिल की धारणा
19.4 ईसाइया बर्लिन तथा 'टू कॉन्सेप्ट्स ऑफ लिबर्टी'
19.5 मार्क्सवादी समालोचना तथा स्वतंत्रता–बोध
19.6 स्वतंत्रता विषयक अन्य सामयिक विचार
19.7 सारांश
19.8 मुख्य शब्द
19.9 कुछ उपयोगी संदर्भ
19.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

19.0 उद्देश्य

स्वतंत्रता को आधुनिक राजनीतिक व सामाजिक सिद्धांत में एक सबसे महत्त्वपूर्ण संकल्पना तथा एक बुनियादी लोकतांत्रिक मूल्य माना जाता है। स्वतंत्रता की धारणा का जन्म आधुनिक सभ्य समाज एवं राजनीतिक प्राधिकार की रचना के प्रसंग में ही हुआ। यद्यपि यह अवधारणा उदारवादी सोच से गहरे जुड़ी हुई है, उदारवादियों ने इस धारणा पर विभिन्न तरीकों से दृष्टिपात किया है। मार्क्सवादीजन स्वतंत्रता–संबंधी उदारवादी धारणाओं की आलोचना करते हैं और व्यक्ति व समाज संबंधी नितान्त भिन्न मान्यताओं पर इस अवधारणा को दोबारा गढ़ते हैं। इस इकाई में हम स्वतंत्रता विषयक विभिन्न पहलुओं पर नज़र डालेंगे, और इस धारणा के अर्थ, औचित्यों एवं सीमाओं को समझने का प्रयास करेंगे। यह इकाई विभिन्न भागों में विभाजित है, प्रत्येक भाग में आप उक्त धारणा का एक विशेष पहलू पायेंगे।

19.1 परिचय

उदारवादी विचार के एक मर्म–सिद्धांत के रूप में स्वतंत्रता की धारणा सर्वाधिक सामान्य तौर पर 'नियंत्रण–अभाव के रूप में समझी जाती है। स्वतंत्रता–संबंधी धारणा आधुनिक यूरोप में नए सामाजिक–आर्थिक व राजनीतिक संबंधों की स्थापना के प्रसंग में जन्मी। उक्त धारणा के मूल में तर्कसंगत निर्णयों को लेने में सक्षम, एक समझदार व्यक्ति का विचार था। यह विवेकी व्यक्ति, यह सोचा गया, आत्म–निर्णय में सक्षम था; दूसरे शब्दों में, व्यक्ति उन निर्णयों को लेने में सक्षम था जो स्वयं उससे संबंध रखते थे। अपनी क्षमताओं को विकसित करने के लिए, व्यक्ति को सभी प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक नियंत्रणों से मुक्ति चाहिए थी।

इस प्रकार, स्वतंत्रता की धारणा का नियंत्रण–अभाव अथवा व्यक्ति की स्वायत्तता–क्षेत्र के रूप में विकास हुआ। साथ ही, तथापि, इस तथ्य को कि एक सामाजिक संगठन के भीतर व्यक्ति अकेला नहीं है और अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध में ही अस्तित्व रखता है, इस बात की अपेक्षा थी कि स्वायत्तता संबंधी उनके क्षेत्रों पर अन्य व्यक्तियों का समान ही अधिकार होना चाहिए। इस लिहाज से कि स्वायत्तता हेतु सभी व्यक्तियों द्वारा अपने–अपने दावे

न्यूनतम विवाद के साथ स्पष्टतया अनुभव किए जा सकें, यह अनिवार्य था कि नियंत्रणों एवं नियमतीकरण संबंधी एक व्यवस्था बनायी जाए और हर एक द्वारा उसका अनुपालन किया जाये। हॉब्स, लॉक एवं रूसो जैसे दार्शनिकों द्वारा प्रस्तुत सामाजिक संविदा संबंधी सिद्धांतों ने नियंत्रणों की अविद्यमानता के रूप में स्वतंत्रता की धारणा सामने रखी। उसी के साथ, उन्होंने उस ढाँचे का प्रस्ताव भी रखा जिसके भीतर वैयक्तिक स्वतंत्रता प्रकट होनी थी। तदनुसार, राजनीतिक समुदाय का विचार व्यक्तियों की क्षमताओं व स्वायत्तता तथा उन आदेशों की एक समकालिक मान्यता पर आधारित था कि सभी व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता पर नियंत्रणों की एक सर्वमान्य श्रंखला के अधीन होने चाहिए।

तदनुसार, यह बोध अवश्य होना चाहिए कि स्वतंत्रता, जिसका आम समझ में मतलब है स्वच्छंदता अथवा वैयक्तिक कर्म हेतु नियंत्रणों एवं अवरोधों का अभाव, तथा जिसको एक लोकतांत्रिक आदर्श माना जाता है, हमेशा सामाजिक संबंधों में एक विशिष्ट नियंत्रण–श्रंखला के भीतर जहाँ–तहाँ पाये जाने के रूप में प्रतिपादित किया गया है। आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में स्वतंत्रता के स्वीकार्य रूपों में जिसे देखा जाता है, उसके लिए हमेशा सीमायें रही हैं। आगामी भाग में, हम स्वतंत्रता के तत्त्वों तथा उक्त विषयक अवरोधों हेतु औचित्यों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, स्वतंत्रता के अर्थ पर दर्ष्टि डालेंगे।

19.2 स्वतंत्रता का अर्थ

जैसा कि प्रस्तावना में उल्लिखित है, स्वतंत्रता का अर्थ है नियंत्रणों से मुक्ति, अथवा उनका अभाव। किसी व्यक्ति को मुक्त अथवा कुछ करने में स्वतंत्र माना जा सकता है, जब उसके कार्य अथवा विकल्प दूसरे के कार्यों अथवा विकल्पों द्वारा बाधित अथवा अवरुद्ध न हों। यह समझना आवश्यक है कि अवरोधों का अभिप्राय राजनीतिक व अन्य प्राधिकरणों द्वारा डाली गई अड़चनों से है। तदनुसार, कारवास, दासत्व या गुलामी, कानूनों का अधीनीकरण, आदि को पराधीनता अथवा स्वतंत्रता के अभाव की दशाओं के अभिप्राय से देखा जा सकता है। जबकि कारावास अथवा कानून–अधीनीकरण जैसी पराधीनता–संबंधी दशाएँ स्वतंत्रता पर अवरोधों के रूप में प्रतीत हो सकती हैं, हम जानते हैं कि आधुनिक लोकतांत्रिक सामाजिक व राजनीतिक संगठन विधिसंगत एवं संस्थागत संरचनाओं पर आधारित हैं, जो कि हर व्यक्ति की स्वतंत्रता के समान महत्त्व को सुनिश्चित करने पर अभिलक्षित हैं। किसी भी समाज के पास, इसी कारण, कोई असीमित 'स्वतंत्रता–संबंधी अधिकार' नहीं होगा। हर समाज के पास स्वतंत्रता विषयक प्रतिबंधों की एक श्रृंखला होगी, जो कि इस तथ्य द्वारा औचित्य प्रतिपादित होंगे कि लोग इन प्रतिबंधों को उन दशाओं में यथासंभव सर्वश्रेष्ठ के रूप में स्वीकार करते हैं, जिनमें स्वतंत्रता को अधिकतम सीमा तक बढ़ाया जा सकता है।

'नियंत्रण–अभाव' अथवा 'बाह्य अवरोधों का अभाव' के रूप में स्वततंत्रता–बोध का आमतौर पर 'नकारी' के रूप में वर्णन किया जाता है। स्वतंत्रता का 'नकारात्मक' प्रभाव दो भिन्न अर्थों में दिखाई पड़ता है :

(अ) पहले अर्थ में, कानून को स्वतंत्रता के मुख्य अवरोध के रूप में दखा जाता है। हॉब्स ने, उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता का वर्णन 'कानूनों की खामोशी' के रूप में किया। इस प्रकार का दर्ष्टिकोण स्वतंत्रता को सिर्फ़ उसके द्वारा सीमित के रूप में देखता है, जिसे करने से अन्य जन लोगों को सोच–समझकर रोकते हैं। यह बोध, इसी कारण, कानून व सरकार दोनों पर एक निश्चित सीमा का अर्थ देता है प्रतीत होता है। जॉन लॉक जैसे दार्शनिकों ने, हालाँकि, इशारा किया कि स्वतंत्रता हेतु किसी वचनबद्धता का अर्थ यह नहीं है कि कानून को समाप्त कर दिया जाए। इसकी बजाय, इसका अर्थ है कि कानून किसी की स्वतंत्रता को दूसरों के अतिक्रमण से बचाने तक सीमित

रहना चाहिए। लॉक ने, इसी कारण, यह पेशकश की कि कानून स्वतंत्रता को सीमाबद्ध नहीं करता, बल्कि उसे वह बढ़ाता है व उसकी रक्षा करता है।

(ब) दूसरा दर्षष्टिकोण स्वतंत्रता को 'विकल्प की स्वतंत्रता' के रूप में देखता है। मिल्टन फ्रीडमैन, उदाहरण के लिए, अपनी पुस्तक *कैपिटलिज़्म एण्ड फ्रीडम* (1962) में कहते हैं कि 'आर्थिक स्वतंत्रता' में शामिल है बाज़ार–चौक में चुनने की आज़ादी – उपभोक्ता को यह चुनने की आज़ादी कि वह क्या खरीदे, कर्मचारी को यह आज़ादी कि वह अपनी नौकरी अथवा पेशे को चुने और उत्पादक को यह आज़ादी कि वह क्या उत्पादन करे और किसे रोज़गार दे। 'चुनने' का अर्थ है कि व्यक्ति विभिन्न विकल्पों की किसी श्रष्ंखला से बेरोकटोक और स्वैच्छिक चुनाव कर सके (देखें एन्ड्रयू हेवुड, *पॅलिटिकॅल थिअरी*, पृ. 259–261)।

स्वतंत्रता के विषय में बात करते हुए प्रायः उसकी नकारी व सकारी धारणाओं के बीच भेद किया जाताहै, यथा 'बाह्य अवरोधों का अभाव' तथा 'समर्थ करने वाली अथवा मदद करने वाली दशाओं की विद्यमानता' के बीच। अन्य शब्दों में, कुछ 'करने की आज़ादी' तथा वस्तुतः **उसे करने में सक्षम होने के बीच अंतर** कुछ करने के लिए स्वाधीन अथवा स्वतंत्र होने को उसे करने से रोका अथवा बचाया जाना नहीं है। जबकि करने में समर्थ होना कुछ करने हेतु वित्तीय रूप से अथवा अन्यथा क्षमता रखना है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति किसी भी नौकरी को करने के लिए स्वतंत्र अथवा असंयत हो सकता है, फिर भी, हो सकता है व्यक्ति के पास वे अर्हताएँ अथवा आर्थिक संसाधन न हों जो उसकी उम्मीदवारी को सार्थक बना सकें। राजनीतिक सिद्धांती जन नियंत्रण–अभाव के रूप में स्वतंत्रता तथा उन दशाओं के बीच भेद करते हैं, जो स्वतंत्रता को सार्थक बनाते हैं। एक भूखों मरता आदमी जो एक महँगे रेस्तराँ में खाने के लिए कानूनन स्वतंत्र है (उसे कोई रोका नहीं है), दरअसल कानूनी स्वतंत्रता के आधार पर किसी भी अधिकार का प्रयोग नहीं कर सकता। इस उदाहरण में खाने की स्वतंत्रता को राज्य द्वारा किसी सकारात्मक कार्यवाही की अपेक्षा होगी। यही वह तर्क है जो व्यक्तियों के लिए अवसर बढ़ाने हेतु बनाये गए सामाजिक विधान को सही ठहराने के लिए प्रयोग किया जाता है। ऐसी सकारात्मक कार्यवाही से राज्य के बारे में कहा जाता है कि न सिर्फ़ असमानता घटायेगा, बल्कि स्वतंत्रता भी बढ़ायेगा (नॉर्मन बैरी, *ऐन इण्ट्रोडक्शन टु मॉडर्न पॅलिटिकॅल थिअरी*, मैकमिलन, लंदन, 2000, पृ. 194)।

स्वतंत्रता संबंधी नकारी संकल्पना अंग्रेज़ी, राजनीतिक विचार–सूत्र का लक्षण है, जिसका प्रतिनिधित्व जैरेमी बैन्थम, जेम्स मिल, जॉन स्टुअर्ट मिल, हैनरी सिगविक, हर्बर्ट स्पैन्सर एवं उन सैद्धान्तिक व नव–सैद्धान्तिक अर्थशास्त्रियों ने किया, जिन्होंने यादषच्छिक सरकार के अनावश्यक नियंत्रणों से मुक्ति पाने के लिए लोगों के दावों का समर्थन किया। नकारी स्वतंत्रता का मुख्य स्वयंसिद्ध सत्य था कि 'हर व्यक्ति अपने हित को सबसे अच्छी तरह जानता है' और दूसरे, राज्य को लोगों के साधन व प्रयोजन तय नहीं करने चाहिए। इस सिद्धांत के लिए अनिवार्य थी अनुबन्ध की अलंघ्यता (sanctity)। अलंघ्यता संबंधी इस मान्यता में अन्तर्निहित थी यह समझ कि किसी अनुबन्ध में शामिल होने की कार्यवाही, यदि अनुबंध–शर्तें वैयक्तिक स्वतंत्रता में बाधक हों फिर भी, एक स्वतंत्रता–संबंधी, विकल्प–विशेष के प्रयोग संबंधी अभिव्यक्ति थी। इस प्रकार, विचारकों के इस सूत्र के लिए, किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता एक उस क्षेत्र से संबंधित कार्य था, जिसमें उसको अकेला छोड़ दिया गया और कार्यवाही की गुणवत्ता से कोई वास्ता नहीं रखा गया। नकारी स्वतंत्रता की अवधारणा स्वतंत्रता के एक अर्थ विषयक सिद्धांत के रूप में सबसे अच्छी तरह समझी जाती है। यद्यपि नकारी स्वतंत्रता की प्रायः 'भूखों मरने की आज़ादी' के रूप में निन्दा की जाती है, यह समझ कुछ–कुछ भ्रामक है। यह राज्य–हस्तक्षेप पर कोई अनिवार्यतः निषेध लागू नहीं करती, बल्कि सिर्फ़ इतना बताती है कि इसे इस आधार पर सही नहीं ठहराया जा सकता

कि यह आज़ादी को बढ़ाती है, हालाँकि असमानता हेतु के लिए तर्कों का औचित्य प्रतिपादन के लिए आह्वान किया जा सकता है। तथापि, नकारी स्वतंत्रता एवं अहस्तक्षेप–सिद्धांत (*laissez-faire*) अर्थव्यवस्थाओं के बीच ऐतिहासिक संबंध से इंकार नहीं किया जा सकता, और उसके अधिकांश समर्थकों ने एक अल्पतम राज्य का पक्ष लिया है। यह अवधारणा इस अर्थ में उदासीन है कि यह राजनीति की एक व्यापक शृंखला के अनुरूप है, और यह अच्छी है या नहीं की ओर संकेत किए बग़ैर स्वतंत्रता की एक दशा का वर्णन करती है।

स्वतंत्रता संबंधी नकारात्मक धारणा की आलोचना आधुनिक उदारवादियों, सामाजिक प्रजातंत्रवादियों एवं समाजवादियों की ओर से हुई है। उन्नीसवीं सदी में उदारवादियों, मुख्यतः टीएच ग्रीन व कुछ हद तक जे. एस. मिल, ने नकारी स्वतंत्रता संबंधी कुछ सबसे पहली आलोचनाएँ प्रस्तुत कीं। उन्होंने महसूस किया कि पूँजीवाद ने सामंतवादी पदानुक्रमों एवं कानूनी प्रतिबंधों से छुटकारा पा लिया है (खासकर आर्थिक पेशों में), परन्तु इसने विशाल जन–साधारण को ग़रीबी, बेरोज़गारी और बीमारी के वशीभूत कर दिया है। ऐसी परिस्थितियों को उतना ही बाधित स्वतंत्रता के रूप में देखा गया जितना कि कानूनी अड़चनों एवं सामाजिक नियंत्रणों को।

स्वतंत्रता संबंधी सकारात्मक धारणा को अपनाने वाले प्रथम उदारवादियों में एक थे टीएच ग्रीन (1836–82), जिन्होंने स्वतंत्रता को लोगों की 'स्वयं द्वारा सबसे अधिक और सबसे अच्छा किए जाने' संबंधी योग्यता के रूप परिभाषित किया। यह स्वतंत्रता महज अकेला छोड़ दिए जाने में ही नहीं, बल्कि कार्यवाही करने के अधिकार में भी निहित होती है जिसके द्वारा वह प्रत्येक व्यक्ति हेतु उपलब्ध अवसरों की ओर ध्यान ले जाती है। (एण्ड्रयू हेवुड, पॅलिटिकॅल थिअरी, पृ. 262) सकारी स्वतंत्रता की अवधारणा ही कल्याणकारी राज्य का आधार रही है। इस धारणा ने राज्यों द्वारा रखे गए सामाजिक कल्याणकारी प्रावधानों के पीछे प्रेरक शक्ति के रूप में काम किया है, जिसके द्वारा स्वतंत्रता समानता से जुड़ गयी।

आगामी भाग में हम स्वतंत्रता संबंधी मिल की धारणा का अध्ययन करेंगे। मिल स्वतंत्रता संबंधी एक नकारात्मक संकल्पना, अथवा व्यक्ति के अपने तन व मन पर परम नियंत्रण का समर्थन करते प्रतीत होते हैं। इस अनन्य विश्लेषण में जैसे, व्यक्तित्व संबंधी मिल की यह धारणा उन्हें स्वतंत्रता संबंधी एक सकारात्मक धारणा के करीब ले आयी है।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) स्वतंत्रता–संबंधी धारणा का सूत्रबद्ध वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्वतंत्रता संबंधी सकारी एवं नकारी अवधारणाओं के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

19.3 स्वतंत्रता संबंधी जेएस मिल की धारणा

जेएस मिल कृत *ऑन लिबर्टी* 1960 के दशक में अकादमिक बहसों में प्रभावशाली रही। मिल की पुस्तक को स्वतंत्रता–संबंधी नकारी अवधारणा की एक व्याख्या के रूप में देखा जाता है। वैयक्तिक स्वतंत्रता हेतु मिल के तर्कों के आधार में प्रथा के लिए एक सख़्त नफ़रत का भाव छिपा है, और जिसको कानूनी नियमों व मानदण्डों हेतु युक्तियुक्त रूप से सही नहीं ठहराया जा सकता। कभी–कभी यह भी तर्क दिया जाता है कि मिल के अनुसार कोई भी स्वतंत्र कार्य, चाहे वह कितना भी अनैतिक हो, अपने में सद्‌गुण का कुछ तत्त्व रखता है, इस तथ्य से गुज़रकर कि वह स्वतंत्रतापूर्वक निष्पादित किया गया हो। यद्यपि मिल ने व्यक्ति के कार्यों पर नियंत्रण को बुराई माना, उन्होंने नियंत्रणों को पूरी तरह अतर्कसंगत नहीं माना। फिर भी, उन्होंने महसूस किया कि समाज के भीतर स्वतंत्रता के पक्ष में एक परिकल्पना हमेशा रहती है। स्वतंत्रता विषयक कुछ नियंत्रणों को, इसी कारण, उनके द्वारा सही ठहराया जाना पड़ा जो उन्हें व्यवहार में लाये।

मिल के अनुसार, स्वतंत्रता का उद्देश्य था 'व्यक्तित्व' हासिल करने को बढ़ावा देना था। व्यक्तित्व (individuality) का अभिप्राय हर मानव–गुण सम्पन्न व्यक्ति के विशिष्ट एवं अन्य लक्षण से है, और आज़ादी का अर्थ है, इस व्यक्तित्व का बोध, यथा निजी विकास एवं आत्म–निश्चय। मनुष्यों में व्यक्त्वि के गुण ने ही उन्हें निष्क्रिय की बजाय सक्रिय बनाया, साथ ही सामाजिक व्यवहार की वर्तमान रीतियों का छिद्रान्वेषी भी, ताकि वे जब तक परम्पराओं को तर्कसंगत न पायें उन्हें स्वीकार न करें। मिल के तानेबाने में स्वतंत्रता इसीलिए मात्र नियंत्रण–अभाव के रूप में नहीं, बल्कि कुछ वांछित प्रवषत्तियों की सुविवेचित वृद्धि (deliberate cultivation) में नज़र आती है। यही बात है जिसके कारण मिल को अक्सर स्वतंत्रता की सकारी संकल्पना की ओर आकर्षित होते देखा जाता है।

स्वतंत्रता संबंधी मिल की संकल्पना का मूल विकल्प की धारणा में भी है। यह बात उनके इस विश्वास से प्रमाणित होती है कि वह व्यक्ति जो 'अपने लिए स्वयं की जीवन–योजना को चुनने' का अधिकार दूसरों को दे देता है, 'व्यक्तित्व' अथवा आत्म–निश्चय संबंधी मानसिक शक्ति नहीं दर्शाता। वह मात्र जो मानसिक शक्ति रखता लगता है वह 'अनुकरण' की 'वानर सदृश' (apelipe) मानसिक शक्ति है। दूसरी ओर, वह व्यक्ति 'जो स्वयं के लिए योजना चुनता है, अपनी सभी मानसिक शक्तियों को काम में लाता है' (1974, पृ. 123)। अपने व्यक्तित्व को स्पष्टतया अनुभव करने के लिए, और उसके द्वारा स्वतंत्रता की स्थिति प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक था कि व्यक्तिजन दबावों अथवा मानदण्डों व प्रथाओं का विरोध करें जो आत्म–निश्चय में बाधक थे। मिल का, तथापि, यह विचार भी था कि विरोध करने व स्वतंत्र विकल्प चुनने की क्षमता रखने वाले लोग बहुत ही थोड़े हैं। शेष जन 'वानर–सदृश अनुकरण' में विश्वास रखने वाली विषयवस्तु हैं, जिसके द्वारा वे परतंत्रता की दशा में रहते हैं। स्वतंत्रता–संबंधी मिल की अवधारणा को इसी कारण अभिजातवर्गीय के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि व्यक्ति का उपभोग मात्र एक अल्पसंख्यक वर्ग द्वारा ही किया जा सकता है, न कि व्यापक रूप से जन–साधारण द्वारा।

अन्य उदारवादियों की ही भाँति, मिल ने व्यक्ति व समाज के बीच सीमा–निर्धारण पर बल दिया। वैयक्तिक स्वतंत्रता पर तर्कसंगत अथवा न्यायोचित प्रतिबंधों के बारे में बात करते हुए, मिल ने आत्म–सम्मानजनक एवं अन्य–सम्मानजनक कार्यों के बीच भेद किया, यथा वे कार्य जो सिर्फ़ व्यक्ति–विशेष को प्रभावित करते थे, और वे कार्य जो आम समाज को प्रभावित करते थे। किसी व्यक्ति के साथ किसी प्रतिबंध अथवा हस्तक्षेप को सिर्फ़ दूसरों को नुकसान से बचाने के लिहाज से ही सही ठहराया जा सकता था। उन कार्यों के संबंध में व्यक्ति को स्वयं प्रभावित करते थे, व्यक्ति संप्रभु था। जो सिर्फ़ सामाजिक निग्रहों की इस प्रकार की समझ ऐसे समाज की धारणा प्रदान करती है जिसमें व्यक्ति व समाज के बीच संबंध 'पितृसत्तात्मक' नहीं होता, यथा, व्यक्ति चूँकि अपने हितों का सर्वश्रेष्ठ पारखी होता है, कानून व समाज किसी व्यक्ति के 'सर्वश्रेष्ठ हितों' को प्रोत्साहन देने के लिए हस्तक्षेप नहीं कर सकते।

इसी प्रकार, यह धारणा कि किसी कार्य पर सिर्फ़ तभी नियंत्रण लगाया जा सकता है यदि वह दूसरों को हानि पहुँचाता हो, इस धारणा को नियम–विरुद्ध कहकर घोषित करती है कि कुछ कार्य अन्तर्भूत (intrinsically) रूप से अनैतिक होते हैं और इसी कारण इस बात पर ध्यान दिए बग़ैर कि वे किसी और को प्रभावित करते हैं, अवश्य ही सज़ा देकर सुधारे जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, मिल का तानाबाना 'उपयोगितावाद' को अप्रासंगिक कहकर घोषित करता है, जैसा कि बैन्थम द्वारा कहा गया है, जो कि हस्तक्षेप को सही ठहरायेगा यदि वह आम हित को अधिकतम सीमा तक बढ़ाता है। तथापि, मिल के विचार में व्यक्ति व समाज के बीच सीमांकन इस अर्थ में कठोर नियम–निष्ठ नहीं है कि सभी कार्य दूसरों को किसी न किसी तरीके से प्रभावित करते ही हैं, और मिल का मानना यह भी था कि उसका सिद्धांत दूसरों के आत्म–सम्मानजनक व्यवहार के संबंध में किसी नैतिक उदासीनता का धर्मोपदेश नहीं करता; साथ ही उन्होंने महसूस किया कि अनैतिक व्यवहार को हतोत्साहित करने के लिए अनुनय का प्रयोग अनुमति के योग्य है। इसी तरह, मिल का सामाजिक लाभ को प्रोत्साहन देने हेतु स्वतंत्रता के सहायक मूल्य में अटूट विश्वास था। यह बात विचार, चर्चा एवं अभिव्यक्ति की संपूर्ण स्वतंत्रता तथा सभा व संस्था हेतु अधिकार के लिए उसके तर्कों के विषय में खासतौर पर सही है। मिल ने महसूस किया कि खुली चर्चा पर से सभी प्रतिबन्ध हटा लिए जाने चाहिए, क्योंकि विचारों की खुली प्रतिस्पर्धा से सच्चाई उजागर होगी। यह उल्लेख किया जा सकता है कि स्वतंत्रताओं संबंधी आज की फ़िहरिस्त में, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को शायद एक लोकतांत्रिक आदर्श के रूप में

आर्थिक स्वतंत्रता की बनिस्पत अधिक महत्त्व दिया जाता है। लोगों के बीच मुक्त विनिमय निस्संदेह एक महत्त्वपूर्ण स्वतंत्रता–व्यवहार है और एक समाज, जिसने सभी प्रकार की स्वतंत्रताओं को वर्जित कर इसे ही स्वीकृत किया हो, तिस पर भी अपेक्षाकृत स्वतंत्र होगा। (देखें नॉर्मन बैरी, *ऐन इण्ट्रोडक्शन टु मॉडर्न पॅलिटिकॅल थिअरी*, अध्याय : लिबर्टी)

19.4 ईसाइया बर्लिन तथा 'टू कॉन्सेप्ट्स ऑफ लिबर्टी'

अपनी नई साहित्यिक रचना टू *कॉन्सेप्ट्स ऑफ लिबर्टी* (प्रथम प्रकाशित : 1958) में ईसाइया बर्लिन स्वतंत्रता संबंधी नकारी व सकारी धारणाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं, यथा सामाजिक प्रसंग में निग्रह–अभाव के रूप में स्वतंत्रता की धारणा का उसकी कार्य–प्रणाली से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ। बर्लिन के अनुसार, स्वतंत्रता संबंधी 'नकारी' धारणा को इस प्रश्न का जवाब देकर समझा जा सकता है : 'वह क्षेत्र क्या है जिसके भीतर अधीनस्थ – एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह – है अथवा उसे, वह जो दूसरे व्यक्तियों के हस्तक्षेप के बग़ैर कर सकने अथवा बन जाने में सक्षम हो, करने के लिए अथवा बनने के लिए छोड़ दिया जाये?, (1969, पृ. 121)। दूसरी ओर, 'सकारी' अर्थ इस प्रश्न के उत्तर से सम्बन्धित है : 'नियंत्रण अथवा हस्तक्षेप का स्रोत क्या, अथवा कौन, है जो किसी व्यक्ति को उस की बजाय यह करने, अथवा बनने, को निश्चित कर सकता है?' (1969, पृ. 122)

सकारी स्वतंत्रता महज अकेले छोड़ दिए जाने के रूप में नहीं, प्रत्युत 'स्वयं–प्रभुत्व' के रूप में आज़ादी में हस्तक्षेप नहीं करती। इस सिद्धांत में स्वयं–संबंधी एक विशेष सिद्धांत शामिल है। व्यक्तिगत विशेषता (personality) एक उच्च और एक निम्न व्यक्तित्व में विभाजित होती है। उच्च व्यक्तित्व ही किसी व्यक्ति के यथार्थ एवं युक्तिपरक दीर्घकालीन लक्ष्यों का स्रोत होता है, जबकि निम्न व्यक्तित्व उसकी उन युक्तिहीन इच्छाओं को मनोविनोद प्रदान करता है, जो अस्थायी और अल्पकालिक प्रवृत्ति की होती हैं। कोई व्यक्ति उस हद तक ही स्वतंत्र है जहाँ तक कि उसका उच्च व्यक्तित्व उसके निम्न व्यक्तित्व के वश में है। तदनुसार, एक व्यक्ति बाहरी बलों द्वारा अवरुद्ध न किए जाने के अर्थ में स्वतंत्र हो सकता था, परन्तु वह युक्तिहीन लालसाओं का दास ही रहता; जैसे कि एक नशेड़ी, एक शराबी अथवा एक विवश जुआरी को परतंत्र ही कहा जायेगा। इस अवधारणा का मुख्य लक्षण है, इसका खुले रूप से मूल्यांकनकारी स्वभाव, इसका प्रयोग वांछित माने जाने वाली जीवन–रीति से विशेष रूप से जुड़ा है। सकारी स्वतंत्रता संबंधी धारणा में व्यक्तित्व का एक विशेष हस्तक्षेप शामिल है और वह सिर्फ़ यह मानकर नहीं चलती कि गतिविधि का एक कार्यक्षेत्र होता है, जिसकी ओर ही व्यक्ति स्वयं को लक्ष्य–निर्देशित करे। उक्त धारणा यह सुझाती है कि जब व्यक्ति उसकी ओर लक्ष्य–निर्देशित होता है तो वह स्वतंत्र किया जा रहा होता है। सकारी स्वतंत्रता संबंधी बर्लिन की धारणा के छिद्रान्वेषी यह महसूस करते हैं कि सकारी स्वतंत्रता में विश्वास इस धारणा को भी लेकर चलता है कि अन्य सभी मूल्य – समानता, अधिकार, न्याय आदि – उच्च स्वतंत्रता संबंधी सर्वोच्च मूल्य के मातहत हैं। इसी प्रकार, यह धारणा कि व्यक्ति के उच्च संकल्प समष्टियों, जैसे कि वर्ग, राष्ट्र व प्रजाति, के संकल्पों के अनुरूप ही होते हैं और सत्तावादी विचारधाराओं की ओर प्रवृत्त कर सकते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) स्वतंत्रता संबंधी जेएस मिल अथवा ईसाइया बर्लिन के विचारों का आलोचनात्मक विवेचन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

19.5 मार्क्सवादी समालोचना तथा स्वतंत्रता–बोध

स्वतंत्रता संबंधी मार्क्सवादी संकल्पना उन उदारवादी विचारों से भिन्न है, जिनकी चर्चा ऊपर की गई है। भिन्नता संबंधी मुख्य बातें व्यक्ति व समाज संबंधी मार्क्सवादी समझ, दोनों के बीच संबंध एवं पूँजीवादी समाज संबंधी मार्क्सवादी समीक्षा से सामने आती हैं। यद्यपि उदारवादी दृष्टिकोण व्यक्ति एवं उसकी स्वतंत्रता की केन्द्रिकता पर आधारित है, मार्क्सवादी जन स्वतंत्रता की धारणा को परतंत्रता की शर्तों के रूप में व्यक्ति व समाज संबंधी उदारवादी धारणा पर आधारित देखेंगे। मार्क्सवादियों के अनुसार, व्यक्ति विकल्प के स्वतंत्र प्रयोग हेतु स्वायत्त स्थानों की सीमाओं द्वारा समाज में अन्य व्यक्तियों से विलग नहीं है। इसकी बजाय वे परस्पर निर्भरता में एक साथ बन्धे हैं। व्यक्तित्व–संबंधी धारणा उसी तौर से एक धनी व्यक्तित्व–संबंधी धारणा में बदल गयी, जो कि व्यक्ति की सामाजिक संलग्नता पर ज़ोर देती है, और इस धारणा में भी कि व्यक्तिजन रचनात्मक उत्कृष्टता की स्थिति में पहुँच सकते हैं और ऐसे समाज में अपनी क्षमताएँ विकसित कर सकते हैं जो अपने सभी सदस्यों की उन्नति का प्रयास करता है। मार्क्सवादियों के अनुसार, इसी कारण स्वतंत्रता रचनात्मक व्यक्तित्व के विकास में निहित होती है, और ऐसे पूँजीवादी समाज में प्राप्त नहीं की जा सकती जहाँ व्यक्तिजनों को स्वार्थ की सीमाओं द्वारा अलग–अलग कर दिया जाता है, और जहाँ वे स्वयं के स्वतंत्र होने की कल्पना मात्र कर सकते हैं जबकि वास्तव में वे शोषणकारी प्राधारों से बँधे होते हैं। सिर्फ़ ऐसे समाज में जो निजी हितों के स्वार्थपूर्ण प्रोत्साहन से मुक्त हो, ही स्वतंत्रता की स्थिति विद्यमान रह सकती है। स्वतंत्रता, इस प्रकार, एक पूँजीवादी समाज में प्राप्त नहीं की जा सकती।

ये विचार फ्रेड्रिक एन्जिल्स कृत *ऐन्टी–ड्यूरिंग* एवं कार्ल मार्क्स कृत *इकॉन्मिक एण्ड फ़िलॅसॉफ़िक मैन्युस्क्रिप्ट्स ऑफ़ 1844* में स्पष्टतया व्यक्त हैं। एन्जिल्स स्वतंत्रता–संबंधी धारणा की चर्चा आवश्यकता से स्वतंत्रता तक अवस्थान्तर गमन की स्थिति के रूप में करते हैं। आवश्यकता–संबंधी अवस्था को उस स्थिति द्वारा सही निरूपित किया जाता है जिसमें व्यक्ति दूसरे की इच्छा के अधीन होता है। एन्जिल्स बताते हैं कि इंसान में उन शक्तियों को पहचाने व समझने की क्षमता होती है, जो उसके जीवन को अनुकूलित व निश्चित करती हैं। मनुष्य ने इस प्रकार उन प्राकृत कानूनों के विषय में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त की जो उसके अस्तित्व को निर्धारित करते हैं और यह भी जाना कि इन कानूनों के साथ यथासंभव सर्वश्रेष्ठ तरीके से किस प्रकार रहें। विडम्बना ही है कि मनुष्य अब तक उन

उत्पादन–बलों के बंधन से मुक्त नहीं हो पाया है जिन्होंने उसे ऐतिहासिक रूप से अधीनता में रखा है, या अन्य शब्दों में, उसे आवश्यकता के कार्यक्षेत्र में ही सीमित रखा है। स्वतंत्रता की स्थिति में पहुँचने के लिए, मनुष्य को न सिर्फ़ मानव इतिहास की जानकारी ही, बल्कि उसे बदल डालने की क्षमता भी रखनी पड़ती है। वैज्ञानिक समाजवाद की ही मदद से मनुष्य आवश्यकता के कार्यक्षेत्र को छोड़ने तथा स्वतंत्रता के कार्यक्षेत्र में घुसने की आशा कर सकता है। स्वतंत्रता *कम्युनिस्ट मैनिफ़ैस्टो* में मार्क्स व एन्जिलस द्वारा निर्धारित साम्यवादी समाज संबंधी धारणा का एक महत्त्वपूर्ण अवयव है। एक साम्यवादी समाज में ही, जहाँ कोई वर्ग–शोषण नहीं होगा, वह स्वतंत्रता प्राप्त होगी।

अपनी पुस्तक *मैन्युस्क्रिप्ट्स* में कार्ल मार्क्स दष्ढ़तापूर्वक कहते हैं कि पूँजीवादी समाज व्यक्ति को अमानवीय बना रहा है। वह न सिर्फ़ व्यक्ति को उसके यथार्थ व्यक्तित्व से विमुख कर देता है, वह उसको समाज की रचनात्मक प्रवर्तक शक्तियों से भी पष्थक् कर देता है। मार्क्स प्रस्ताव करते हैं कि उन परिस्थितियों को बदलकर ही, जिनमें पष्थक्करण होता है, स्वतंत्रता पुनर्प्राप्त की जा सकती है। तदनुसार, सिर्फ़ ऐसे ही एक साम्यवादी समाज में, जहाँ उत्पादन–साधन सामाजिक रूप से रखे जाते, और समाज का प्रत्येक सदस्य सभी की उन्नति के लिए दूसरे के साथ सहयोग में काम करता, सच्ची आज़ादी हासिल की जा सकती थी। इस प्रकार, मार्क्स की सामाजिक व्यवस्था में स्वतंत्रता को आत्म–सिद्धि व आत्म–बोध अथवा व्यक्ति के सच्चे स्वभाव की अनुभूति को द्योतित करते एक सकारात्मक अर्थ में देखा जाता है। मार्क्स ने स्वतंत्रता के यथार्थ कार्यक्षेत्र को 'उसके अपने लिए ही स्वतंत्रता का परिवर्धन' के रूप में देखा। इस प्रयोज्य संसाधन की अनुभूति, मार्क्स का मानना था, अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु दूसरों के साथ काम करते हुए, सिर्फ़ रचनात्मक उद्योग के अनुभव से ही की जा सकती है। इस सामाजिक व्यवस्था के तहत, रॉबिन्सन क्रूसो, जिसने कि जिस सीमा तक अधिक से अधिक संभव था नकारी स्वतंत्रता का उपभोग किया, उसके द्वीप पर उसे रोकने अथवा बाध्य करने वाला अन्य कोई भी नहीं था, अविकसित और इसी कारण परतंत्र व्यक्ति था, जो कि उन सामाजिक संबंधों से वन्चित था जिनके माध्यम से मनुष्यजन पूर्णता हासिल करते हैं। स्वतंत्रता संबंधी यह धारणा मार्क्स की 'पृथक्करण' संबंधी अवधारणा में स्पष्टतः प्रकट होती है। पूँजीवाद के अन्तर्गत, श्रम को व्यक्तित्व–वंचित (de-personalized) बाज़ार शक्तियों द्वारा नियंत्रित व निरूपित मात्र एक जिन्स के रूप में परिणत कर दिया जाता है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण में पूँजीवादी कर्मचारी इस बात में पृथक्करण भोगते हैं कि वे अपनी ही यथार्थ प्रकृति से अलग हो जाते हैं : वे अपने ही उद्योग के उत्पाद से अलग हो जाते हैं, स्वयं उद्योग–प्रक्रिया से अलग हो जाते हैं, अपने साथी मनुष्यों से अलग हो जाते हैं, और अन्ततः अपने 'सच्चे' व्यक्तित्वों से अलग हो जाते हैं। स्वतंत्रता इसी कारण व्यक्तिगत सिद्धी से जुड़ी है जो कि सिर्फ़ अपृथक्त उद्योग ही करवा सकता है। (एन्ड्रयू हेवुड, *पॅलिटिकॅल थिअरी*, पृ. 263)

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) स्वतंत्रता संबंधी मार्क्स की समीक्षा का आलोचनात्मक विवेचन करें।

.....

.....

19.6 स्वतंत्रता विषयक अन्य सामयिक विचार

बर्लिन को छोड़कर, जिसकी पुस्तक शायद स्वतंत्रता विषयक समकालीन पुस्तकों में सबसे महत्त्वपूर्ण है, अन्य विचारक भी हैं जिन्होंने वैचारिक विभाजन के दोनों पक्षों पर विचारकों द्वारा व्यक्त विचारों पर विस्तार से जाती स्वतंत्रता संबंधी धारणा पर चर्चा की है। मिल्टन फ्रीडमैन, मिल व बर्लिन की ही भाँति, एक उदारवादी थे जिसने अपनी पुस्तक *कैपिटलिज़्म एण्ड फ्रीडम* में पूँजीवादी समाज के एक महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में स्वतंत्रता की धारणा को विकसित किया। आदान–प्रदान की स्वतंत्रता, स्वतंत्रता का एक आवश्यक पहलू था। इस स्वतंत्रता को प्रोत्साहन देने के लिए फ्रीडमैन चाहते थे कि राज्य कल्याण व सामाजिक सुरक्षा से अपना ध्यान हटा ले और स्वयं को कानून व व्यवस्था कायम करने, सम्पत्ति–अधिकारों की रक्षा करने, अनुबंध लागू करने आदि हेतु समर्पित कर दे। फ्रीडमैन के अनुसार, न सिर्फ़ व्यक्तिजनों के बीच स्वतंत्र व स्वैच्छिक आदान–प्रदान हेतु स्वतंत्रता अनिवार्य थी, यह एक पूँजीवादी समाज के भीतर भी आवश्यक था कि स्वतंत्रता प्राप्त की जा सके। इसके अतिरिक्त, यह आर्थिक स्वतंत्रता ही थी, जिसने राजनीतिक स्वतंत्रता हेतु कालोचित व आवश्यक परिस्थिति प्रदान की।

अपनी पुस्तक द *कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ़ लिबर्टी* (1960) में, एफ.ए. हयेक ने स्वतंत्रता संबंधी एक सिद्धांत प्रतिपादित किया, जो राज्य की नकारात्मक भूमिका पर बल देता है। हयेक के अनुसार, एक स्वतंत्रता की स्थिति तब प्राप्त होती है, जब एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के यादृच्छिक मनोरथ के अधीन नहीं रहता। हयेक इसको 'वैयक्तिक स्वतंत्रता' कहते हैं और साथ ही, राजनीतिक स्वतंत्रता समेत स्वतंत्रता के अन्य रूपों से वैयक्तिक स्वतंत्रता की श्रेष्ठता व निरपेक्षता को विहित करते हुए इसे स्वतंत्रता के अन्य रूपों से अलग मानते हैं। हयेक अनुमोदित करते हैं कि स्वतंत्रता का मूल अर्थ 'नियंत्रणों का अभाव' के रूप में सुरक्षित रहना चाहिए। स्वतंत्रता के नाम पर राज्य–हस्तक्षेप के बढ़ने का अर्थ होगा, उस वास्तविक स्वतंत्रता का हस्तांतरण जो कि नियंत्रणों से व्यक्ति की मुक्ति में निहित होती है।

स्वतंत्रता संबंधी मार्क्सवादी धारणा द्वारा प्रभावित विचारकों के एक अन्य समूह ने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्वतंत्रता जिस प्रकार आधुनिक पूँजीवादी समाजों में व्यवहार की जाती है, अकेलेपन को जन्म देती है। ऐरिक फ्रोम (1900–1980) ने स्पष्ट किया कि आधुनिक समाजों में अलगाव व्यक्ति के उसकी रचनात्मक क्षमताओं व सामाजिक संबंधों से पृथक् होने के परिणामस्वरूप ही उत्पन्न हुआ। इस पृथक्करण ने व्यक्ति में उसके मानसिक

स्वास्थ्य को प्रभावित करते हुए उसमें भौतिक व नैतिक अलगाव पैदा किया। केवल रचनात्मक एवं सामूहिक कार्य द्वारा ही व्यक्ति समाज के प्रति स्वयं को पुनः प्रतिष्ठित कर सका है। हर्बर्ट मार्क्युज़ ने भी अपनी पुस्तक *वन–डाइमैन्शनल मैनः स्टडीज़ इन दि आइडिऑलॅजि ऑफ़ एडवान्स्ड इण्डस्ट्रियल सोसाइटी* (1968) में पूँजीवादी समाजों में पृथक्करण की प्रकृति संबंधी अच्छी तरह से छानबीन की है। मार्क्युज़ दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि पूँजीवादी समाजों में व्यक्ति की रचनात्मक बहुआयामी क्षमताएँ निष्फल हो जाती हैं। मनुष्य स्वयं को सिर्फ़ अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में निरन्तर लगे एक उपभोक्ता के रूप में ही व्यक्त कर सकता है।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) स्वतंत्रता विषयक कुछ समकालीन धारणाओं पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

19.7 सारांश

स्वतंत्रता की धारणा उदारवादी विचार के मर्म में है, जो विवेकशील व्यक्ति को अपने केन्द्र में रखती है और व्यक्ति या उसके स्वायत्तता–क्षेत्र एवं राज्य व समाज के बीच एक सीमारेखा खींचती है। स्वतंत्रता का उसके सामान्य बोध में अर्थ है, 'नियंत्रणों का अभाव'। दूसरे शब्दों में, यह ऐसी स्थिति को इंगित करती है जिसमें एक व्यक्ति जो अपने निजी मामलों से संबंधित तर्कसंगत निर्णयों को लेने में सक्षम है, राज्य व समाज समेत, बाहर से किसी भी नियंत्रण के बिना कोई भी कार्यवाही करने के लिए स्वतंत्र है। साथ ही, बहरहाल, स्वतंत्रता की धारणा एक राजनीतिक समुदाय एवं राजनीतिक प्राधिकार की धारणा के रूप में उसी समय क्रम–विकसित होकर सामने आयी। इस समकालिक क्रम–विकास का मतलब था, सभी व्यक्तियों की स्वतंत्रताओं को समान रूप से मान्यता और यह बोध कि वैयक्तिक स्वतंत्रता पर सकारण नियंत्रणों को इस आधार पर सही ठहराया जा सकता है कि उन्होंने ऐसी परिस्थितियाँ प्रदान कीं जिनमें वैयक्तिक स्वतंत्रता बिना किसी विवाद के उपभोग की जा सके।

नियंत्रण–अभाव के रूप में स्वतंत्रता की धारणा स्वतंत्रता संबंधी एक 'नकारी' धारणा से जुड़ी है। स्वतंत्रता संबंधी एक 'सकारी' धारणा को टी.एच. ग्रीन जैसे विचारकों द्वारा सुस्पष्ट किया गया, जिन्होंने उन परिस्थितियों का ध्यान रखा जिन्होंने व्यक्ति को वास्तव में स्वतंत्र होने में समर्थ किया। तदनुसार, एक सकारी धारणा के रूप में स्वतंत्रता कार्य करने का अधिकार, और वे अवसर जिन्होंने कार्य संभव बनाया, रखने में निहित थी। कल्याणकारी राज्य संबंधी धारणा ने इसी विचार को लेकर शुरूआत की जिसे अपेक्षा थी कि राज्य ऐसी परिस्थितियाँ प्रदान करने हेतु सकारात्मक कदम उठाये जिनमें व्यक्तिजन कार्य करने एवं स्वयं को विकसित करने में वास्तविक रूप से स्वतंत्र हों।

यद्यपि जे.एस. मिल एवं ईसाइया बर्लिन जैसे दार्शनिकों ने उक्त दोनों धारणाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश की, मार्क्सवादियों ने महसूस किया कि स्वतंत्रता एक पूँजीवादी समाज में अनुभव नहीं की जा सकती। एक पूँजीवादी समाज, उन्होंने बल देकर कहा, व्यक्ति को उसके सामाजिक प्रसंगों से एवं उसके अपने स्वभाव से पृथक् कर देता है। स्वतंत्रता, हम देख सकते हैं, विभिन्न विचार–सूत्रों द्वारा विभिन्न रूप से समझी गई है। यह, बहरहाल, लोकतांत्रिक विचार में एक बुनियादी अवधारणा बनी ही हुई है।

19.8 मुख्य शब्द

स्वायत्तता (Autonomy) : इसका शाब्दिक अर्थ है, स्व–शासन अर्थात् अपनी सरकार। संस्थाएँ व समूह स्वायत्त कहे जाते हैं, यदि वे अपने निजी मामले खुद निबटाने हेतु स्वतंत्र हैं। व्यक्तिजनों के मामले में स्वायत्तता 'स्वतंत्रता' से गहरे से जुड़ी है, न सिर्फ़ 'अकेले छोड़ दिए गए' संबंधी धारणा जताते हुए बल्कि किसी के अपने मामलों से संबद्ध निर्णयों के लिए जाने हेतु एक क्षमता का अस्तित्व सुझाते हुए भी।

सामाजिक प्रजातंत्रवादी (Social Democrats) : ये एक 'सदय' अथवा 'शिष्ट' पूँजीवादी व्यवस्था का समर्थन करते हैं। बाज़ार व राज्य के बीच एक संतुलन पैदा करने के प्रयास में, वे पूँजीवाद को लाभ कमाने के लिए सबसे भरोसेमंद व्यवस्था मानते हैं और साथ ही, राज्य को बाज़ार की बजाय नैतिक सिद्धांतों के अनुसार सामाजिक पारितोषिक वितरणार्थ एक युक्ति के रूप में देखते हैं।

19.9 कुछ उपयोगी संदर्भ

गौबा, ओ.पी., *समकालीन राजनीति सिद्धांत*, मयूर पेपरबैक्स, नोयडा, 1997 (अध्याय 11 : स्वतंत्रता की अवधारणा)

बैरी, नॉर्मन, *ऐन इण्ट्रोडक्शन टु मॉडर्न पॅलिटिकॅल थिअरी*, मैकमिलन, लंदन, 2000 (अध्याय 8 : लिबर्टी)

हेवुड, एण्ड्रयू, *पॅलिटिकॅल थिअरी*, मैकमिलन, लंदन, 1999 (अध्याय 9 : फ्रीडम, टॉलेरेशन एण्ड लिबरेशन)

19.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 19.1

2) देखें भाग 19.2

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 19.3 और 19.4

बोध प्रश्न 3

1) देखें भाग 19.5

बोध प्रश्न 4

1) देखें भाग 19.6